पद १५७

(राग: कानडा - ताल: त्रिताल)

अगणित गुणगणना तुझी। यादव माधवा रे।।ध्रु.।। धवा-धवा जपत उमाधवा न कळे अंत। माणिक प्रभु सर्वांतर्यामी। जाणे साधु संत।।१।।